उद्देश्य निहित प्रबन्ध

डा0 नज़ाकत हुसैन
एसोसिएट प्रोफेसर
राजकीय महाविद्यालय
भोजपुर, मुरादाबाद

घोषणा

यह सामग्री विशेष रूप से शिक्षण और सीखने को बढ़ाने के शैक्षणिक उद्देश्य के लिये है। आर्थिक/वाणिज्यिक अथवा किसी अन्य उद्देश्य के लिए इसका उपयोग पूर्णतः प्रतिबन्धित है। सामग्री के उपयोगार्थ इसे किसी ओर के साथ वितरित, प्रसारित या साझा नहीं करेंगें ओर इसका प्रयोग व्यक्तिगत ज्ञान की उन्नति के लिये ही करेंगें। इस ई–कन्टेन्ट में जो जानकारी दी गयी है वह प्रमाणित है और मेरे ज्ञान के अनुसार सर्वोत्तम है।

"प्रत्येक व्यवसायिक उपक्रम को एक ही समूह का गठन करना चाहिए और वैयक्तिक प्रयासों को सामूहिक प्रयासों से जोड़ देना चाहिए। उपक्रम के प्रत्येक सदस्य का योगदान भिन्न भिन्न हो सकता है, परन्तु उनप सभी का योगदान सामान्य लक्ष्य प्राप्त करने की ओर होना चाहिए।" पीटर एफ0 ड्रकर

उद्देश्य निहित प्रबन्ध तकनीक का विकास पीटर एफ0 ड्रकर द्वारा किया गया बाद में जार्ज एस0 ओडिओर्ने ने इसको विकसित करने में सहयोग दिया। हम यह जानते हैं कि प्रत्येक संस्था चाहे वह व्यावसायिक हो या गैर व्यावसायिक, सरकारी हो या निजी क्षेत्र की, उसका कोई निश्चित लक्ष्य या उद्देश्य होता है जिसे प्राप्त करना प्रबन्ध का मुख्य कार्य है और उद्देश्य निहित प्रबन्ध वह तकनीक है जो संगठन के सभी प्रयासों को लक्ष्य प्राप्ति की ओर निर्देशित करती है। उद्देश्य निहित प्रबन्ध के निम्न लक्षण या विशेषताएं कही जा सकती हैं।

1. इसमें उपक्रम का लक्ष्य तथा उसके अनुरूप विभिन्न विभागों के लिए लक्ष्य निर्धारित किए जाते है।

2. ये लक्ष्य कोई एक व्यक्ति निर्धारित नहीं करता बल्कि संचालक, प्रबन्धक, सहायक प्रबन्धक, विभागीय प्रबन्धक व उनके अधीनस्थों के सहयोग से निर्धारित किए जाते है।

3. इस प्रकार यह सामूहिक प्रयासों से लक्ष्य प्राप्ति को ओर अभिप्रेरित करता है।

4. यह वैयक्तिक लक्ष्यों को सामूहिक लक्ष्यों से जोड़ने की तकनीक है तथा नियोजन का एक प्रभावपूर्ण तरीका है।

उद्देश्य निहित प्रबन्ध की प्रक्रिया या चरण

1. दीर्धकालीन लक्ष्य एंव रणनीतियों का निर्धारण
2. फर्म तथा विभागों के लिए अल्पकालीन स्पष्ट लक्ष्यों का निर्धारण
3. वैयक्तिक निष्पादन मानदण्डों का निर्धारण
4. प्राप्त परिणामों का मूल्यांकन
5. पुनरीक्षण तथा नियन्त्रण

उद्देश्य निहित प्रबन्ध का महत्व

1. कार्य का लक्ष्य की ओर निर्देशन
2. अभिप्रेरणा में सुधार
3. कार्य की स्पष्टता
4. मानवीय संसाधनों का सदुपयोग
5. कार्य मूल्यांकन सम्भव
6. समस्याओं का सही ज्ञान
7. कर्मचारियों का विकास

उद्देश्य निहित प्रबन्ध की सीमाएं

1. सर्वोच्च प्रबन्ध के सहयोग में कमी
2. एम0बी0ओ0 की पूर्ण व्याख्या का अभाव
3. अनुपयुक्त लक्ष्यों का निर्धारण
4. कागजी कार्यो पर अधिक ज़ोर
5. कार्यक्रम को लागू करने में कमियां

सन्दर्भ ग्रन्थः

1. व्यावसायिक प्रबन्ध के सिद्वान्त, डा0 आर. सी. गुप्ता, साहित्य भवन पब्लिकेशन्स, आगरा